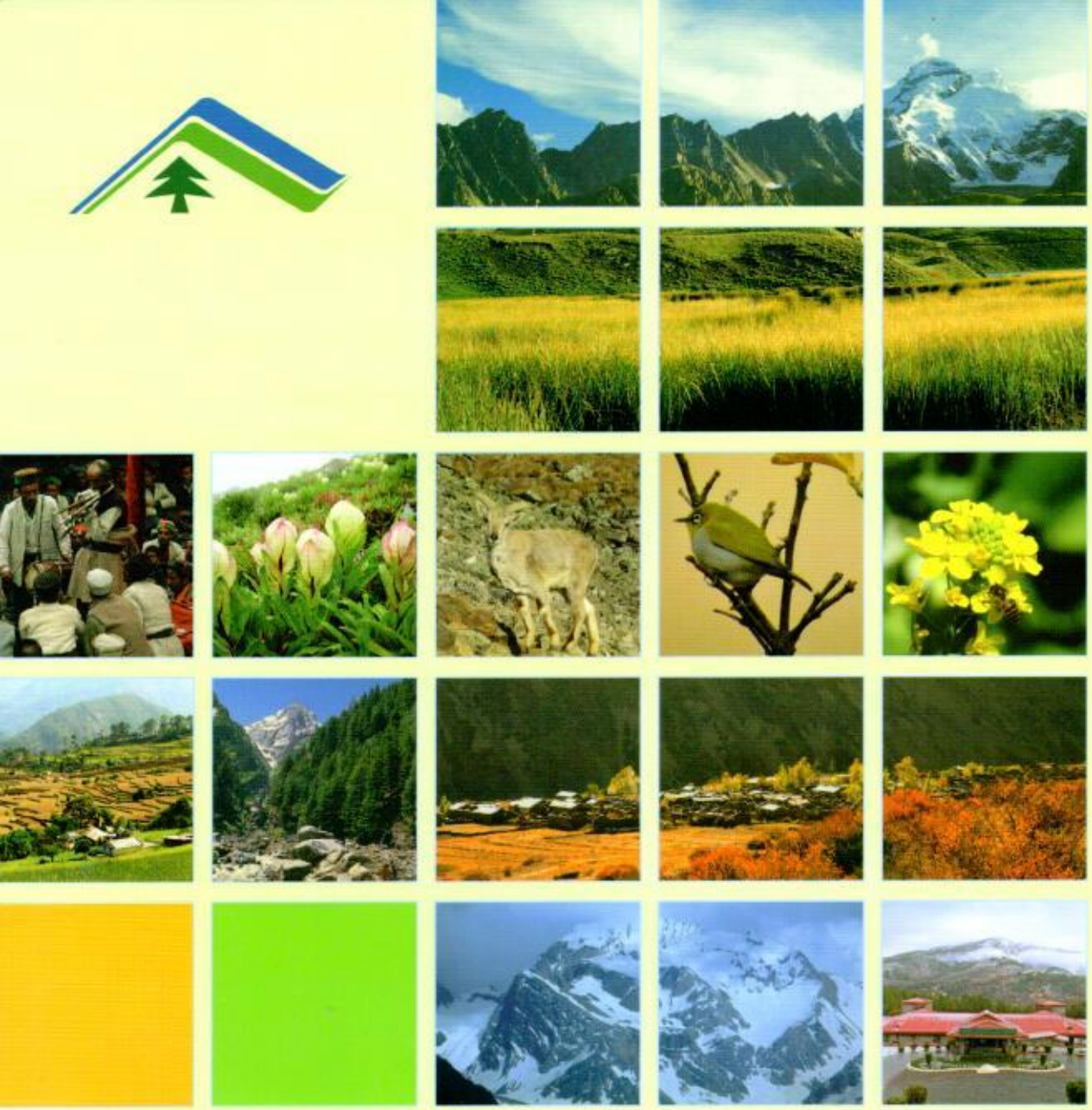

संस्थान एक परिचय

गो० ब० पन्त हिमालय पर्यावरण एवं विकास संस्थान

संस्थान

गोविन्द बल्लभ पन्त हिमालय पर्यावरण एवं विकास संस्थान, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत एक स्वायत्तशासी संस्थान के रूप में भारत रत्न पं0 गोविन्द बल्लभ पन्त के जन्म शताब्दी वर्ष 1988 में कोसी–कटारमल (अल्मोड़ा) में स्थापित किया गया। वैज्ञानिक ज्ञान के प्रसार और समेकित प्रबंधन रणनीतियों को विकसित करने तथा प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में उनकी क्षमता के प्रदर्शन तथा सम्पूर्ण भारतीय हिमालय क्षेत्र में सुदृढ़ पर्यावरणीय विकास को सुनिश्चित करने के लिए इस संस्थान को एक केन्द्रीय संस्थान के रूप में स्वीकृति प्रदान की गई है। सामाजिक–सांस्कृतिक, पारिस्थितिकीय, आर्थिक और भौतिक प्रणालियों की समन्वित समझदारी पर आधारित कार्यक्रम भारतीय हिमालयी क्षेत्र के सतत् विकास का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। अतः इस तथ्य को स्वीकारते हुए यह संस्थान, इन प्रणालियों के बीच गहनतम संबंधों में संतुलन बनाए रखने का सजग प्रयास करता है। लक्ष्य की प्राप्ति हेतु संस्थान के सभी अनुसंधान और विकास कार्यक्रमों में प्राकृतिक और सामाजिक विज्ञान के परस्पर सामंजस्य पर विशेष बल देने के साथ–साथ बहुआयामी और समग्र दृष्टिकोण का अनुसरण किया जाता हैं। इस प्रयास में संवेदनशील पर्वतीय पारि–प्रणालियों को संरक्षित करने और प्राकृतिक संसाधनों के सतत् उपयोग पर विशेष ध्यान दिया जाता है। विभिन्न कार्यक्रमों की दीर्घकालीन स्वीकार्यता और सफलता को सुनिश्चित करने हेतु स्थानीय जनता की भागीदारी के सजग प्रयास किये जाते हैं एवं विभिन्न लाभार्थियों के लिए प्रशिक्षण और पर्यावरणीय शिक्षा एवं जागरूकता, संस्थान के सभी अनुसंधान और विकास कार्यक्रमों के अनिवार्य घटक हैं। संस्थान, कोसी–कटारमल, अल्मोड़ा में स्थित अपने मुख्यालय तथा पाँच क्षेत्रीय इकाईयों –गढ़वाल इकाई, श्रीनगर गढ़वाल (उत्तराखण्ड), हिमाचल इकाई, मोहल–कुल्लु (हिमाचल प्रदेश), सिक्किम इकाई, पांगथांग–गंगटोक (सिक्किम), उत्तर–पूर्वी इकाई, ईटानगर (अरूणाचल प्रदेश) तथा पर्वतीय प्रभाग, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, इंदिरा पर्यावरण भवन (नई दिल्ली) के सहयोग से क्रिया–कलाप संचालित करता है।

उद्देश्यः

- भारतीय हिमालयी क्षेत्र (आईएचआर) की पर्यावरणीय समस्याओं पर गहनतम अनुसंधान एवं विकास मूलक अध्ययन करना।
- पर्यावरण संबंधी स्थानीय ज्ञान का अनुज्ञापन और सुदृढ़ीकरण तथा इन्टरेक्टिव नेटवर्किंग के माध्यम से हिमालयी क्षेत्र में कार्यरत वैज्ञानिक सस्थानों, विश्वविद्यालयों/गैर सरकारी संगठनों तथा स्वयंसेवी संस्थाओं के पारस्परिक सम्पर्क एवं सहयोग द्वारा क्षेत्रीय प्रासंगिकताओं से संबन्धित शोध कार्यों में योगदान देना।
- स्थानीय ज्ञान के समावेश से क्षेत्र के सतत् विकास हेतु उपयुक्त प्रौद्योगिकी पैकेजों एवं वितरण प्रणालियों का विकास तथा प्रदर्शन करना।

अनुसंधान एवं विकास के विषय

सभी हितधारकों की आवश्यकताओं के अनुरूप संस्थान के अनुसंधान और विकास कार्यक्रमों को निम्नांकित चार क्रियाशील समूहों तथा दस विषय क्षेत्रों में पुनः वर्गीकृत किया गया है।

समूह–1 (एसईडी तथा केसीबी)

- सामाजिक–आर्थिक विकास (एसईडी)
- ज्ञान उत्पाद एवं क्षमता निर्माण (केसीबी)

समूह–2 (डब्ल्यूपीएम, ईएएम तथा ईजीपी)

- जलागम प्रविधियाँ एवं प्रबन्धन (डब्ल्यूपीएम)
- पर्यावरण आकलन एवं प्रबन्धन (ईएएम)
- पर्यावरणीय अभिशासन तथा नीति (ईजीपी)

समूह–3 (बीसीएम, ईएस तथा सीसी)

- जैवविविधता संरक्षण एवं प्रबन्धन (बीसीएम)
- पर्यावरणीय सेवाऐं (ईएस)
- जलवायु परिवर्तन (सीसी)

समूह–4 (बीटीए तथा ईपी)

- जैव–प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग (बीटीए)
- पर्यावरण कायिकी (ईपी)

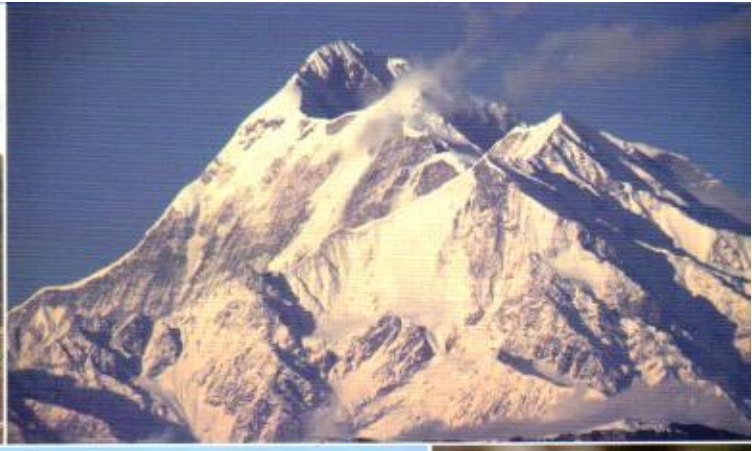

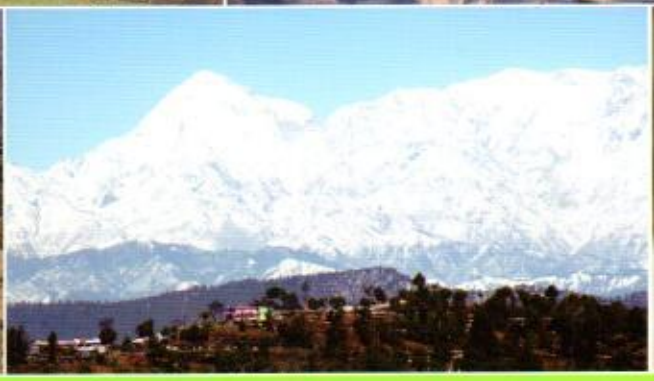

अनुसंधान एवं विकास की प्राथमिकताएं

अनुसंधान

- जलागम सेवाएं, प्रबन्धन एंव भू–उपयोग नीति
- घरेलू ऊर्जा के विकल्प
- हिमालयी कृषि प्रणालियों की आर्थिक और पारितंत्रीय दृष्टि से उन्नत उपादेयता
- जैवविविधता का संरक्षण तथा सतत् प्रयोग
- संरक्षित क्षेत्र प्रबन्धन–मुद्दे एवं समाधान
- पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं का मूल्यांकन तथा प्रेरणा आधारित प्रक्रियाऐं
- जलवायु परिवर्तन के प्रभाव, उपाय तथा अनुकूलन
- हिमालयी क्षेत्र हेतु जल–विद्युत परियोजनाओं का पर्यावरणीय प्रभाव विश्लेषण
- आपदा प्रबन्धन एवं निराकरण–आधारीय आंकड़े तथा ज्ञान उत्पाद
- नगरी क्षेत्रों का पर्यावरणीय प्रबन्धन
- पर्यावरणीय दृष्टि से अनुकूल पर्यटन
- हिमालय में उद्यमशीलता तथा स्वरोजगार
- देशज ज्ञानः पारम्परिक जीवन–शैली,भवन निर्माण कला एवं स्वास्थ्य सुरक्षा पद्धतियाँ
- पलायनः सामाजिक–आर्थिक एवं सांस्कृतिक समस्याएं
- पर्यावरणीय पुनर्स्थापन में जैवप्रौद्योगिकी का उपयोग
- क्षमता निर्माण, तकनीकी हस्तांतरण तथा अनुकूलन

विकास की सम्भावनाएं/कार्यक्रम तथा योजनाऐं

- सतत् प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन
- उच्च मूल्य के पादपों हेतु संवर्धन पैकेज
- भारतीय हिमालय क्षेत्र में समेकित पारिस्थितिकी–विकास अनुसंधान कार्यक्रम (आईईआरपी)
- पर्वत आधारित विकास नीतियां

प्रदर्शन एवं प्रसार (प्रकीर्णन)

- बंजर भूमि पुनर्स्थापन तथा संरक्षण मॉडल
- आजीविका की सम्भावनाएं
- क्षमता निर्माण एवं कौशल विकास
- नेटवर्किंग
- प्रकाशन/प्रलेखन

नवीन पहल

1. हिमालयी शोधवृत्तिः *शोध के प्रति समर्पित भावी शोधार्थियों को तैयार कर विज्ञान को आगे बढ़ाना*
2. हिमालयी युवा शोधकर्ताओं का मंचः *अनुसंधान के क्षेत्र में बदलाव लाने के लिए शोधार्थियों को एकजुट करना*
3. हिमालयी शोध परामर्शदाताओं का मंचः *शोध की गुणवत्ता को बढाना और शोधार्थियों के ज्ञान को विकसित करना*
4. हिमालयी लोकप्रिय व्याख्यान श्रृंखलाः *भारतीय हिमालयी क्षेत्र के सतत् विकास हेतु कार्यों की प्रशंसा और विचारों की अभिव्यक्ति*
5. हिमालयी जनता के प्रतिनिधियों की बैठकः *भारतीय हिमालय क्षेत्र के सतत् विकास पर नीतियों का समर्थन*
6. हिमालयी विद्यार्थियों का प्रकृति जागरूकता अभियानः *सृजनात्मक प्रकृति आधारित अध्ययन को सरल बनाना*
7. हिमालयी किसानों की आजाविका वृद्वि बैठकः *नये अवसरों एवं कौशलों के माध्यम से मानव समुदायों को सशक्त बनाना*
8. पर्वत पर्यावरणीय नीति ज्ञान कोषः *आपसी अध्ययन एवं अनुभव साझा करने हेतु नीतियों का निर्माण करना*

गढ़वाल इकाई

हिमाचल इकाई

सिक्किम इकाई

उत्तर–पूर्वी इकाई

पर्वतीय प्रभाग इकाई

इकाईयों की अनुसंधान एवं विकास प्राथमिकताऐं

गढ़वाल इकाई

- सतत् पर्यटन के लिए समेकित प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन युक्तियाँ
- बहुउद्देश्यीय प्रजातियों एवं सामुदायिक प्रतिभाग के प्रयोग से भूमि संरक्षण आधारित मॉडल
- तकनीकी प्रदर्शन एवं प्रशिक्षण

सम्पर्क:

वैज्ञानिक प्रभारी, जीबीपीआईएचईडी गढ़वाल इकाई, भक्तियाना, श्रीनगर (गढ़वाल)– 246 174, उत्तराखण्ड। (फोनः +91–1346–252603, 251150; फैक्सः +91–1346–252424), ई–मेलः rkmaikhuri89@gmail.com

हिमाचल इकाई

- संरक्षित क्षेत्रों में जैवविविधता अध्ययन तथा औषधीय पादपों का बहिर्स्थानीय अनुरक्षण
- संवहन क्षमता का विश्लेषण तथा परिवेशी वायु की गुणवत्ता का पर्यवेक्षण
- जलविद्युत तथा ठोस अपशिष्ठ प्रबन्धन का पर्यावरणीय प्रभाव विश्लेषण/सामरिक पर्यावरणीय आकलन
- जलवायु परिवर्तन संवेदनशीलता का आकलन

सम्पर्क:

वैज्ञानिक प्रभारी, जीबीपीआईएचईडी हिमाचल इकाई, मोहल–कुल्लु–175 126, हिमाचल प्रदेश। (फोनः+91–1902–260208, 260313; फैक्सः +91–1902–260207), ई–मेलः samantss2@rediffmail.com

सिक्किम इकाई

- मानवीय पहलुओं को देखते हुए कंचनजंघा भू–दृश्य बायोस्फेअर रिजर्व तथा अन्य संवेदनशील क्षेत्रों में जैवविविधता संरक्षण अध्ययन।
- भू–आपदाओं का भूगर्भीय–पर्यावरणीय आकलन और बचाव रणनीतियाँ
- संरक्षित क्षेत्रों में मानवीय पहलुओं का अध्ययन।
- रेडोडेंड्रोन प्रजातियों के संरक्षण हेतु जैव प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग

सम्पर्क:

वैज्ञानिक प्रभारी, जीबीपीआईएचईडी, सिक्किम इकाई, पोस्ट बॉक्स–24, पांगथांग, गंगटोक–737 101, सिक्किम। (फोनः +91–3592–237328, 237189; फैक्सः +91–3592–237415), ई–मेलः hkbadola@gmail.com

उत्तर–पूर्वी इकाई

- स्थानान्तरण खेती के लिए मानव केंद्रीय भूमि उपयोग।
- जनजातीय समुदायों हेतु स्वदेशी ज्ञान प्रणाली तथा प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन।
- आजीविका सुधार हेतु समुदाय संरक्षित क्षेत्र उपयुक्त कम लागत की तकनीकियों के माध्यम से जैवविविधता संरक्षण

सम्पर्क:

वैज्ञानिक प्रभारी, जीबीपीआईएचईडी उत्तर–पूर्वी इकाई, विवेक विहार, ईटानगर–171 113, अरूणाचल प्रदेश। (फोनः +91–360–2216423; फैक्सः +91–360–2211773) ई–मेलः prasannasamal@rediffmail.com

पर्वतीय प्रभाग (संस्थान की 5वीं इकाई)

- पर्वतीय पारीतंत्र का सतत् एवं समन्वित विकास
- पर्वतीय मुद्दों को उजागर करना तथा पर्वतीय क्षेत्रों को विकास की मुख्य धारा में लाना।
- पारस्परिक निर्भरता आधारित नीति तथा योजना के माध्यम से क्षेत्रों के मध्य कड़ियों को प्रोत्साहन देना।
- पर्वतों पर गैर–पर्वतीय पारी–प्रणाली की निर्भरता से संबन्धित पहचान एवं जागरूकता।
- पारी–प्रणाली सेवाओं के प्रदानदाताओं हेतु प्रेरकों के ढ़ाचे को विकसित करना।

सम्पर्क:

वैज्ञानिक प्रभारी, पर्वतीय प्रभाग, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय इंदिरा पर्यावरण भवन, जोर बाग रोड, नई दिल्ली–110 003, (फोनः +91–5962–241041, 241154 फैक्सः +91–9562–241150, 241014), ई–मेलः kireet@gbpihed.nic.in

संस्थान में उपलब्ध सुविधाऐं

- पुस्तकालय तथा सूचना केंन्द्र
- ग्रामीण तकनीकी परिसर
- हिमनद अध्ययन केंन्द्र
- प्रकृति विश्लेषण एंव अध्ययन केंन्द्र
- हिमालयी परितंत्र पर आधारित पर्यावरणीय सूचना प्रणाली (इनविस) केंद्र
- आईईआरपी (समन्वित पारिस्थितिकी–विकास अनुसंधान कार्यक्रम)
- वृक्षोद्यान एवं पौंधशालाएं
- सूदूर संवेदन तथा भौगोलिक सूचना प्रणाली (आरएस तथा जीआईएस) प्रकोष्ठ
- मॉडलिंग प्रारुप तथा सांख्यिकीय विश्लेषण प्रयोगशाला
- बहु–स्थलीय मौसम निगरानी केन्द्र
- वैश्विक स्थिति प्रणाली (जीपीएस) संदर्भ केंद्र
- ऊतक संवर्धन प्रयोगशाला
- जल विश्लेषण प्रयोगशाला
- मृदा तथा पौंध विश्लेषण प्रयोगशाला
- केंद्रीय संयत्र विन्यास प्रयोगशाला
- प्रलेखन प्रकोष्ठ
- हिन्दी प्रकोष्ठ
- आईपीआर (बौद्विक सम्पदा अधिकार) प्रकोष्ठ
- जड़ी–बूटी उद्यान
- ग्रीनहाउस / पॉलीहाउस
- प्रशिक्षण, कार्यशाला तथा सेमिनार की सुविधाऐं

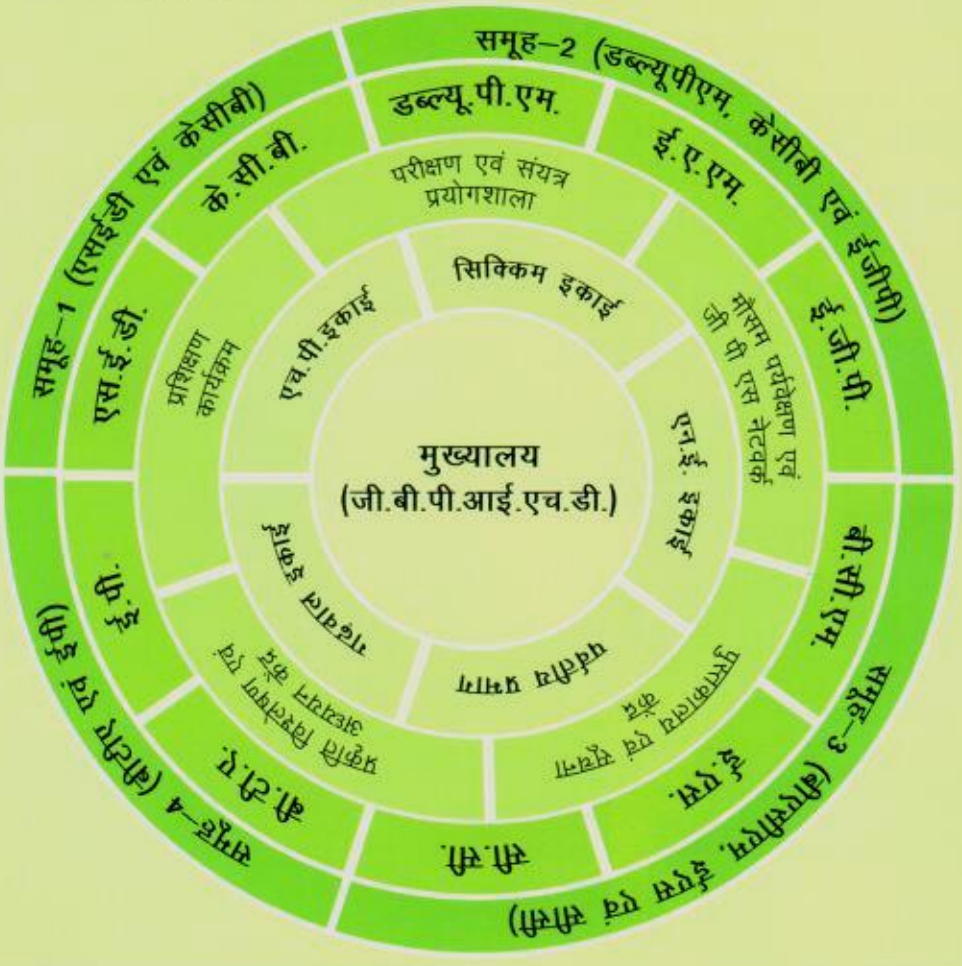

संपोषणीयता के उपाय

- अंर्तविषय
- विषयेत्तर
- बहुविषयक

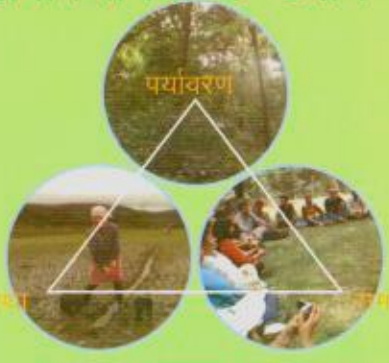

- समाज कल्याण
- पर्यावरणीय गुणवत्ता
- कार्यक्षमता
- निश्पक्षता
- आजीविका सुरक्षा
- लिंग अनुपात
- आई पी आर
- जागरूकता
- क्षमता निर्माण

मुख्य उपलब्धियाँ

जलागम सेवाओं का पुनर्स्थापन एवं पुनर्वास

- हिमालय में अवकृमित भूमि के पुनर्वास हेतु स्वीट (ढलुआ जलागम पर्यावरणीय अभियान्त्रिकी प्रौद्योगिकी) पैकेज का विकास एंव प्रदर्शन।
- मध्य एवं पूर्वी हिमालय में कृषि–वानिकी मॉडलों एंव कम लागत की तकनीकों पर केन्द्रित समेकित जलागम प्रबन्धन का प्रदर्शन।
- उत्तराखण्ड एवं सिक्किम हिमालय में अपवाह क्षेत्र की सुरक्षा हेतु जल स्रोत अन्यारण्य अवधारणा का क्रियान्वयन।
- पारिस्थितिकीय पुनर्वास हेतु पवित्र भूदृश्य मॉडल का विकास।

प्रभाव आकलन एवं समाधान

- मध्य हिमालय में ग्लेशियरों के सिकुड़ने, पिघलने तथा प्रलम्बित अवसाद पैटर्न पर आधारीय आंकडों तथा जलवायु विविधता का विश्लेषण।
- जलविद्युत परियोजनाओं हेतु पर्यावरणीय प्रभाव विश्लेषण/पर्यावरणीय प्रबंधन योजना।
- फूलों की घाटी (उत्तराखण्ड) तथा हिमाचल प्रदेश हेतु ठोस अपशिष्ट प्रबन्धन।
- उत्तराखण्ड एवं सिक्किम में पर्वतीय ढाल स्थिरीकरण तथा भू–पर्यावरणीय खतरों के आकलन के लिए अभियान्त्रिकी तकनीकों का प्रदर्शन।
- सम्पूर्ण उत्तर पश्चिमी हिमालय में वायु की गुणवत्ता तथा वातावरण एवं जलवायु पर आधारित आंकड़े।

दिशानिर्देश, कार्य योजनाएं तथा नीति संबंधी दस्तावेज

- हिमालय हेतु कार्य योजना
- पर्वतीय क्षेत्र में स्थान विशेष की योजना हेतु दिशा निर्देश, वर्षा जल संचयन और हरित सड़क विचारधारा का क्रियान्वयन; शिवालिक क्षेत्र विकास हेतु कार्य योजना तथा ग्रामीण पर्यावरण कार्य योजना (व्हीप)
- भारतीय हिमालयी क्षेत्र की जैव–विविधता के संरक्षण हेतु कार्य योजना; तथा एनबीएसएपी के तहत भारत की वन्य पादप विविधता हेतु रणनीतियां तथा कार्य योजना।
- सतत् हिमालयी पारीतंत्र हेतु अभिशासन

क्षमता विकास और जागरूकता

- संस्थान मुख्यालय में ग्रामीण तकनीकी परिसर की स्थापना और पूर्वोत्तर क्षेत्र में पर्वतीय संदर्भ की कम लागत की तकनीकियों एवं पारिस्थितिकी पर्यटन पर प्रशिक्षण देकर, स्थानीय निवासियों की क्षमता का विकास करना।
- उपलब्ध विशेषज्ञता का कार्यान्वयन–1. संरक्षण शिक्षा का प्रसार एवं प्रचार; 2. बद्री वन (बद्रीनाथ मंदिर का प्राचीन धार्मिक–वन) के पुनर्स्थापन हेतु लोगों की धार्मिकभावनाओं का सदुपयोग; 3. प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन में महिलाओं की सहभागिता बढ़ाने हेतु अत्याधुनिक उपागमों का प्रयोग।
- आईईआरपी के अन्तर्गत क्षेत्र विशेष अनुसंधान व विकास तथा मानव संसाधन विकास का सुदृढ़ीकरण।
- शहरी विज्ञान कार्यक्रम के माध्यम से जागरूकता निर्माण।
- अरूणाचल प्रदेश में समुदाय संरक्षित क्षेत्रों की स्थापना।

जैव–विविधता संरक्षण तथा जैव प्रौद्योगिकीय क्रियान्वयन

- स्थानिक प्रजातियों, संवेदनशील आवासों तथा पारिस्थितिकीय तंत्रों पर आधारित हिमालयी जैव–विविधता का प्रलेखन
- उच्च मूल्य की प्रजातियों के विस्तृत सूचीकरण, उनकी स्थिति के आकलन, विभिन्न आवासों में उनकी संख्या के अध्ययन तथा कृषि तरीकों में सुधार करके औषधीय पादपों के क्षेत्र को बढ़ाना।
- हिमालयी दुलर्भ एवं संकटापन्न वनस्पतियों तथा उच्च मूल्य के पौंधों साथ ही हिमालयी सदाबहार वनों के प्रजनन तथा संरक्षण हेतु प्रवधियों का विकास।
- ठण्डे क्षेत्रों में पादपों की वृद्वि को बेहतर बनाने के लिए सूक्ष्मजीवी इनोक्युलेंट्स का विकास।
- विषम स्थितियों से सूक्ष्मजीवी विविधता की खोज तथा संरक्षण।
- भारतीय हिमालय क्षेत्र में उच्च मूल्य के पौंधों (जैसे; बहुउद्देश्यीय वृक्ष, स्थानिक औषधीय पौंधे, बाँस और रोपण हेतु अन्य प्रजातियां आदि) के प्रसार हेतु पारम्परिक तथा जैव प्रौद्योगिकीय विधियों का विकास।
- सतत् कृषि हेतु परागणकों का संरक्षण एवं प्रबन्धन।
- जैव–विविधता संरक्षण एंव क्षेत्रीय सहयोग प्रदान करने के लिए सीमापारीय भूदृश्य पहल।

देशज ज्ञान का अभिलेखन तथा आधारीय आंकड़े

- चयनित जनजातियों की देशज ज्ञान प्रथाओं तथा उनकी डिजिटल लाइब्रेरी को विकसित करना।

अधिक जानकारी के लिए कृपया संपर्क करें:

डा0 पी.पी ध्यानी
निदेशक
गो0 ब0 पन्त हिमालय पर्यावरण एवं विकास संस्थान
(पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, भारत सरकार का एक स्वायत्तशासी संस्थान)
कोसी–कटारमल, अल्मोड़ा –263 643, उत्तराखण्ड, भारत
फोन: 05962–241041/241154, फैक्स: 05962–241150/241014
ई–मेल: psdir@gbpihed.nic.in, वेबसाइट: http://gbpihed.gov.in

दिसम्बर 2015